वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 15 | शनिवार 10 मई 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

अन्तरराष्ट्रीय सीमा पर तनाव के बीच मुख्यमंत्री ने मंत्रिपरिषद की बैठक ली

आमजन की सुरक्षा और जरूरी व्यवस्थाओं के लिए पुलिस एवं प्रशासन 24 घंटे रहे मुस्तैद

राजस्थानवासियों की बड़ी जिम्मेदारी, अफवाहों से बचें, अधिकृत सूचनाओं पर ही विश्वास करें, समन्वय बनाकर एडवाइजरी की पालना सुनिश्चित कराएं: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

प्रभारी मंत्री एवं जनप्रतिनिधियों को अपने क्षेत्रों में निरन्तर सम्पर्क बनाए रखने के निर्देश

जयपुर. कंचन केसरी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भारत-पाकिस्तान सीमा पर उत्पन्न वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए शुक्रवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्रिपरिषद् की बैठक लेकर प्रशासनिक और आपदा राहत तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने प्रभारी मंत्रियों, जनप्रतिनिधियों एवं प्रभारी सचिवों को अपने क्षेत्रों में निरन्तर सम्पर्क बनाए रखने और आवश्यकता के अनुरूप जरूरी संसाधनों की उपलब्धता एवं व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने बैठक में कहा कि राजस्थान की लम्बी अन्तरराष्ट्रीय सीमा को देखते हुए प्रदेशवासियों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। इसे देखते हुए आमजन सोशल मीडिया पर चलने वाले भ्रामक और अफवाह फैलाने वाली खबरों का प्रसार करने से बचें और सरकार द्वारा जारी अधिकृत सूचनाओं पर ही विश्वास करें। उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा और संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने मंत्रिपरिषद् की बैठक के बाद प्रेस वार्ता में बताया कि मंत्रिपरिषद् की बैठक में आपात स्थिति के समय उठाए जाने वाले सभी आवश्यक कदमों और उनकी तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने केन्द्र और राज्य सरकार की ओर से जारी किए गए जरूरी दिशा-निर्देशों की स्थानीय प्रशासन द्वारा आवश्यक पालना करवाए जाने के संबंध में निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री ने बताया कि सरकार ने सीमावर्ती जिलों में रिक्त पदों को तुरंत भरने का काम शुरू कर दिया है। बिजली, पेयजल, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभागों के साथ उपखण्ड अधिकारियों, तहसीलदारों एवं नायब तहसीलदारों के इन जिलों में रिक्त पदों को भरे जाने के आदेश जारी कर दिए गए हैं। बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर एवं श्रीगंगानगर जिलों में 5-5 करोड़ तथा जोधपुर, हनुमानगढ़ एवं फलौदी जिलों में 2.5-2.5 करोड़ रुपये मुख्यमंत्री सहायता कोष के नियमों में शिथिलता प्रदान कर स्वीकृत किए गए हैं। इस राशि का उपयोग आवश्यकतानुसार राहत एवं सहायता कार्यों में किया जा सकेगा। साथ ही, आपदा प्रबंधन मद से सभी जिलों में आवश्यक उपकरण इत्यादि उपलब्ध करवाने के लिए 19 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। आरएसी, एसडीआरएफ, बॉर्डर होमगार्ड इत्यादि की अतिरिक्त नफरी सीमावर्ती क्षेत्रों में भेजी जा रही है। पुलिस एवं प्रशासन को 24 घंटे मुस्तैद रहने के लिए कहा गया है। इन जिलों में अतिरिक्त दमकल और एंबुलेंस की सेवाएं भी उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जा रहा है। पटेल ने कहा कि बैठक में मुख्यमंत्री ने खाद्यान्न, दवाईयों सहित अन्य जरूरी वस्तुओं की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। सीमावर्ती जिलों में अधिक भीड़-भाड़ वाले सार्वजनिक कार्यक्रमों का आयोजन नहीं करने का निर्णय भी किया गया। रात में आवश्यकतानुसार लाइट और सड़क तथा रेलमार्ग पर मूवमेंट को रोकने तथा आवश्यकतानुसार ब्लैकआउट को सुनिश्चित करने के लिए संबंधित एजेंसियों को समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए गए हैं। रक्तदान शिविर लगाने वाली संस्थाओं और रक्तदान करने वाले नियमित डोनरों को भी सक्रिय किया गया है। जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा की गई है कि वे प्रशासनिक निर्देशों और केन्द्र एवं राज्य सरकार की एडवाइजरी की पालना के लिए आमजन को प्रेरित करें तथा छोटी से छोटी घटनाओं पर नजर रखते हुए अफवाहों को फैलने से रोकें।

प्रोपेगेंडा और झूठी खबरों से सतर्क रहें

युद्ध के दौरान फैलाई गई झूठी खबरें न केवल सैनिकों और आम नागरिकों की सुरक्षा को खतरे में डालती हैं, बल्कि समाज में भय और नफरत का भी प्रसार करती हैं। यह न केवल जनता की भावनाओं को भड़काती है, बल्कि सच्चाई की नींव को भी कमजोर करती है। कई बार युद्ध के मैदान से बहुत दूर बैठे लोग भी इन झूठी खबरों के शिकार बन जाते हैं और इससे राष्ट्र की एकता और संप्रभुता को भारी क्षति पहुँचती है।

''जब खबरें बनती हैं हथियार: युद्ध, प्रोपेगेंडा और फेक न्यूज''

प्रियंका सौरभ

युद्ध का समय हमेशा से मानव इतिहास का सबसे तनावपूर्ण और संवेदनशील दौर रहा है। जब दो देशों के बीच टकराव चरम पर होता है, तब सिर्फ हथियारों की ही नहीं, बल्कि सूचनाओं की भी लड़ाई लड़ी जाती है। प्रोपेगेंडा और झूठी खबरें इस संघर्ष का एक अनिवार्य हिस्सा बन जाती हैं। यह स्थिति विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों के बीच युद्ध के समय अत्यंत जटिल हो जाती है।

यह प्रोपेगेंडा क्यों खतरनाक है?

युद्ध के दौरान फैलाई गई झूठी खबरें न केवल सैनिकों और आम नागरिकों की सुरक्षा को खतरे में डालती हैं, बल्कि समाज में भय और नफरत का भी प्रसार करती हैं। यह न केवल जनता की भावनाओं को भड़काती है, बल्कि सच्चाई की नींव को भी कमजोर करती है। कई बार युद्ध के मैदान से बहुत दूर बैठे लोग भी इन झूठी खबरों के शिकार बन जाते हैं और इससे राष्ट्र की एकता और संप्रभुता को भारी क्षति पहुँचती है।

इतिहास के सबक

1965, 1971 और कारगिल युद्ध के दौरान भी दोनों देशों ने प्रोपेगेंडा का भरपूर उपयोग किया था। पाकिस्तान ने 1965 में अपने 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' को लेकर भारतीय क्षेत्र में असंतोष फैलाने की कोशिश की थी, जबकि 1971 के युद्ध में भारत ने रेडियो और प्रिंट मीडिया के जरिए अपने सैनिकों और जनता में आत्मविश्वास बनाए रखा। कारगिल युद्ध में भी फर्जी तस्वीरें और विकृत आंकड़े दोनों ओर से साझा किए गए थे।

कैसे फैलता है प्रोपेगेंडा?

आज की डिजिटल दुनिया में सोशल मीडिया, वॉट्सएप, यूट्यूब और फेक न्यूज वेबसाइट्स के जरिए अफवाहें तेजी से फैलती हैं। फर्जी वीडियो, फोटोशॉप की गईं तस्वीरें और झूठे दावे किसी भी घटना को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत कर सकते हैं। ऐसे में एक साधारण व्यक्ति के लिए यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि क्या सच है और क्या झूठ।

जिम्मेदार नागरिक की भूमिका

युद्ध के समय एक जागरूक और जिम्मेदार नागरिक होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें हर सूचना को बिना जांचे-परखे साझा करने से बचना चाहिए। विश्वसनीय समाचार स्रोतों पर ही भरोसा करें और हर खबर की पुष्टि करें। अगर कोई संदेश या वीडियो संदिग्ध लगे, तो उसे आगे न बढ़ाएं।

प्रोपेगेंडा की मनोवैज्ञानिक चालें

प्रोपेगेंडा का असर केवल सूचना पर ही नहीं, बल्कि लोगों के मानसिक ढांचे पर भी पड़ता है। युद्ध के दौरान डर, असुरक्षा और घृणा जैसी भावनाओं का अधिकतम लाभ उठाया जाता है। यह न केवल समाज को विभाजित करता है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी गंभीर असर डालता है।

सरकार और मीडिया की जिम्मेदारी

सरकार और मीडिया की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे जनता को सटीक और प्रमाणिक जानकारी तक पहुंचाएं। प्रेस की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए, झूठी खबरों और प्रोपेगेंडा के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। मीडिया को भी यह समझना चाहिए कि उनकी जिम्मेदारी केवल खबर देना ही नहीं, बल्कि खबर की सच्चाई को बनाए रखना भी है।

डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता

आज जब सूचनाएं मिनटों में दुनिया भर में फैलती हैं, तब डिजिटल साक्षरता की महत्ता और बढ़ जाती है। आम नागरिकों को यह सिखाना जरूरी है कि वे किस तरह से फर्जी खबरों की पहचान कर सकते हैं और उन्हें कैसे रोका जा सकता है। इसके लिए स्कूलों, कॉलेजों और सामुदायिक केंद्रों में नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

सत्य की ताकत

सच्चाई की शक्ति कभी क्षीण नहीं होती, चाहे युद्ध का कितना भी कठिन समय क्यों न हो। यह केवल उन लोगों पर निर्भर करता है जो सत्य की रक्षा के लिए खड़े होते हैं। इतिहास गवाह है कि झूठ के महल लंबे समय तक टिक नहीं पाते। यही कारण है कि एक जागरूक और सतर्क समाज ही असली विजय प्राप्त कर सकता है।

मीडिया और सोशल मीडिया का बदलता परिदृश्य

वर्तमान समय में, सोशल मीडिया का प्रभाव पारंपरिक मीडिया से भी अधिक हो गया है। यह एक ऐसा मंच है जहां कोई भी व्यक्ति पत्रकार, संपादक या प्रसारक बन सकता है। इसका लाभ न केवल आम लोग बल्कि आतंकी संगठन और विदेशी खुफिया एजेंसियां भी उठा रही हैं। वे फर्जी अकाउंट, बॉट्स और डिजिटल ट्रोल्स के माध्यम से अफवाहें फैलाकर सामाजिक तनाव पैदा कर सकते हैं।

साइबर युद्ध का खतरा

युद्ध का स्वरूप केवल सीमाओं तक सीमित नहीं है। आजकल साइबर युद्ध एक नया मोर्चा बन चुका है, जिसमें प्रोपेगेंडा और झूठी खबरें एक महत्वपूर्ण हथियार हैं। यह न केवल सूचना को विकृत करता है, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता को भी नुकसान पहुंचा सकता है। ऐसे में साइबर सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाता है।

सामाजिक जिम्मेदारी और सजगता

हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम केवल सच्ची और प्रमाणिक जानकारी को ही फैलाएं। हमें यह समझना चाहिए कि झूठी खबरें केवल सच्चाई को ही नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों और सामाजिक सद्भावना को भी नुकसान पहुंचाती हैं। युद्ध का समय देशभक्ति और मानवता की कठिन परीक्षा का समय होता है। इस दौरान प्रोपेगेंडा से बचना और सत्य का समर्थन करना हर नागरिक का कर्तव्य है। याद रखें, युद्ध केवल हथियारों से नहीं, बल्कि सत्य और विवेक से भी जीता जाता है। युद्ध का समय केवल सैन्य ताकत का नहीं, बल्कि सच्चाई और विवेक की परीक्षा का भी होता है। प्रोपेगेंडा से बचना और सच्ची जानकारी तक पहुंचना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। हमें न केवल सूचनाओं की सत्यता की जांच करनी चाहिए, बल्कि समाज में एकता और सहिष्णुता को बनाए रखना भी जरूरी है। याद रखें, युद्ध केवल हथियारों से नहीं, बल्कि सत्य और विवेक से भी जीता जाता है। एक जागरूक समाज ही सच्ची विजय का आधार होता है।

पुलक पर्व के तहत रक्तदान शिविर में 51 यूनिट रक्त एकत्र

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

भारत गौरव, राष्ट्र गौरव, मनोज्ञाचार्य श्री पुलक सागर जी गुरुदेव के 55 वें अवतरण दिवस पर आयोजित त्रिदिवसीय पुलक पर्व के दौरान आज प्रथम दिवस रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। पुलक मंच अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश बैद ने बताया की पुलक मंच परिवार द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय पुलक पर्व के दौरान आज प्रथम दिन आर. के. ब्लड बैंक मे रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमे 51 यूनिट रक्तदान हुआ। कार्यक्रम मे जैन गौरव भामाशाह अशोक पाटनी आर के मार्बल, क्षेत्रीय विधायक विकास चौधरी, यज्ञ नारायण अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ परसाराम चौधरी मुख्य अतिथि थे। शिविर का शुभारम्भ जैन गौरव अशोक जी पाटनी (आर के मार्बल) ने आचार्य पुलक सागर महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया ततपश्चात मंच की प्राथना हुई। पाटनी जी ने सभी को रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया। भारत गौरव आचार्य पुलक सागर गुरुदेव के अवतरण दिवस पर हॉस्पिटल मे ठंडे पानी की मशीन वाटर कूलर लगाने की घोषणा की। शिविर संयोजक अरविन्द बैद एवं सचिन अजमेरा ने बताया की मुख्य चिकित्सा अधिकारी परसाराम चौधरी ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा की युद्ध की परिस्थितियों को ध्यान मे रखते हुए राज्य सरकार ने ज्यादा से ज्यादा ब्लड संग्रहीत करने के निर्देश दिए है पुलक सागर जी महाराज की अनुकम्पा से राज्य सरकार से निर्देश मिलते ही पुलक मंच का शिविर लग गया उन्होंने अन्य सभी स्वयंसेवी संगठनों से भी अपील की है की वें भी रक्तदान शिविर के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा रक्तदान करवाए विधायक विकास चौधरी ने भी सभी रक्तदानकर्ताओ के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम मे विशिष्ट अतिथि राजेश पिंकी पाटनी ऊंटड़ा वालें थे। महामंत्री जीतू पाटनी ने बताया की कार्यक्रम मे मंच के अशोक शर्मिला पाटनी एवं राजेश पिंकी पाटनी की वैवाहिक वर्षगांठ की सभी ने बधाई दी। कार्यक्रम मे आदिनाथ पंचायत के मंत्री विनोद चौधरी, उपमंत्री इंदरचंद पाटनी, राजकुमार दोसी, अनिल कासलीवाल, पंकज

पहाड़िया, सुशील अजमेरा, प्रदीप गंगवाल, मनोज दोसी, कमल बैद, पूरन टोंग्या, जीतू पाटनी, मांगीलाल झांझरी, मुकैश बैद, मुकेश पापड़ीवाल, अभिषेक बज, राहुल पाटोदी अशोक पाटनी, राहुल गंगवाल, सचिन अजमेरा, अरविन्द बैद, नरेश झांझरी, संदीप पापड़ीवाल, अंकित सेठी, दिनेश गोधा, अंकित गदिया, संजय कसलीवाल, विकास गंगवाल, मुकेश काला, धर्मचंद पाटनी, संदीप रांवका, सुनील भानावत के साथ महिला मंच से शांति बड़जात्या, सुलोचना कसलीवाल, नीलू झांझरी, कुसुम दोसी, रेखा टोंग्या, संगीता पापड़ीवाल, मीनाक्षी गंगवाल, आरती बैद, सपना भानावात, शर्मिला दोसी, शर्मिला पाटनी, अंकिता गंगवाल, अंजलि गंगवाल, रूबी काला, अंतिमा कसलीवाल, राजकुमारी बोहरा, रीना बज, सेजल बैद, आरती, निकिता बैद सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे। **आज गौशाला मे गायों को लापसी गुड़ एवं चारा वितरण:** पुलक मंच अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश बैद ने जानकारी देते हुए बताया की आज पुलक पर्व के द्वितीय दिवस प्रात 9. 30 बजे माधव गौशाला मे गायों को चारा, लापसी एवं गुड़ वितरण किया जायेगा।

चन्द्रप्रकाश बैद: अध्यक्ष-पुलक मंच परिवार

गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति द्वारा संगोष्ठी आयोजित

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

अजमेर। गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति भारत की इचलकरणजी इकाई द्वारा श्री लक्ष्मीनारायण गौ सेवा प्रतिष्ठान में संगोष्ठी आयोजित कर भारतीय संस्कृति पर चर्चा- परिचर्चा की । गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति की अजमेर इकाई की अध्यक्ष आभा गांधी ने बताया कि भारतीय संस्कृति पर आयोजित संगोष्ठी में राष्ट्रीय महासचिव श्याम सुन्दर मंत्री का इकाई अध्यक्ष बृजमोहन काबरा, उपाध्यक्ष कुलदीप चौहान, अशोक पाटोदी, पवन टिबड़ेवाल , मन्त्री सुनील मून्दड़ा ने शाल दुपट्टा एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर अभिनन्दन किया । भारतीय सनातन संस्कृति पर परिचर्चा संगोष्ठी के आयोजन मे इकाई प्रभारी शिवकुमार व्यास ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया । सनातन संस्कृत संस्था ने रजत जयन्ती महोत्सव के अवसर पर बेटी बचाओ, बेटी के जन्म पर उत्सव मनाओ, बेटी को समय पर परणाओ और बहु को पढ़ाओं कार्यक्रम भी जोड़ा है । इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष रामकिशोर तिवाड़ी के निदेर्शानुसार सहमंत्री के पद पर करण सिंह राजपुरोहित एवं विजय पाटिल की नियुक्ति के साथ ही धनराज पारीक को मीडिया प्रभारी नियुक्त किया गया ।अरविंद कुलकर्णी, विष्णु पारीक, अरूण टिबड़ेवाल, मुकेश गर्ग, गोपाल खण्डेलवाल, अरविंद शर्मा, मांगीलाल पुरोहित ने चर्चा- परिचर्चा में भाग लिया और बताया कि सनातन का अर्थ है सदैव एक जैसा रहे और कहा कि संस्कृति की रक्षा के लिए हमें और गंभीरता से कार्य करते हुए मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम के आदर्शों को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है सदस्यों बेटियों के विवाह समय पर हो इस पर भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में आनन्द पाटिल, अभय कुमार पाटिल, सुशांत पोलार, शरद बाहेती, प्रमोद खटावकर, अरविंद कुलकर्णी, वर्ध्दन होसबले, गौशाला समिति के पदाधिकारी एवं अनैक सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज कराई।

वेद ज्ञान

प्रेरणा कर्म का परिणाम

प्रेरणा किसी भी कर्म का मूल और परिणाम होती है। इसके बिना हम किसी कार्य की शुरूआत ही नहीं कर सकते। यह एक ऐसी ऊर्जा है, जो कार्य को करने के लिए प्रेरित करती रहती है। कार्य के पीछे प्रबल प्रेरणा से ही असंभव जैसे कठिन कार्य समय के साथ पूरे कर लिए जाते हैं। कोई भी चीज यों ही अनमने ढंग से पाई और पूरी नहीं की जा सकती है। किसी कार्य को शुरू से अंत तक एक लय के साथ करना एक चुनौती है, जो किसी विशिष्ट उद्देश्य से प्रेरित हुए बिना असंभव है। जहां भी हमारी प्रेरणा कमजोर होती है। हमारे कार्य का अंजाम लड़खड़ा जाता है। असफलता के कारणों का यदि सूक्ष्म विश्लेषण किया जाए तो पता चलेगा कि इनमें अधिकतर का कारण प्रेरणा का अभाव ही है। सफल व्यक्तियों या महापुरुषों की जीवनगाथा को देखें तो पता चलेगा कि वे अपने लक्ष्य के प्रति प्रेरित थे। प्रेरणा कैसे मिले? कौन हमें प्रेरित करे? और इसे कैसे लगातार बनाए रखें? समाज में जिसकी प्रतिष्ठा होती है, जिसे अच्छा माना जाता है, हम उसी ओर आकर्षित होते हैं। समाज के मूल्य और मानदंड हमें उस ओर जाने की अनायास प्रेरणा देते हैं। हम उसे पाने के लिए बरबस चल पड़ते हैं। मूल्यों की उत्कृष्टता और निकृष्टता समाज के ऊपर निर्भर करती हैं, परंतु समाज में जो भी मूल्य प्रभावी होंगे, वही हमें प्रेरित एवं प्रभावित करते हैं। समाज हमारी प्रेरणा का प्रमुख केंद्र है। स्वतंत्रता आंदोलन में वीर बलिदानियों की लंबी सूची है। ये शहीद भारतमाता के चरणों में अपने जीवन को खुशी-खुशी इसी कारण उत्सर्ग कर सके, क्योंकि राष्ट्र के प्रति अपार प्रेम ही उन्हें इस ओर प्रेरित करता रहा। उनकी प्रेरणा कभी कमजोर नहीं पड़ी और वे कभी दुर्बल नहीं हुए। आज समाज में धन की सर्वोपरि प्रतिष्ठा है। इसलिए यह प्रतिष्ठा हमारी प्रेरणा बन गई है। धन उपार्जित करना बुरी बात नहीं है। धन उपार्जन करना चाहिए, परंतु इसके लिए नैतिक मूल्यों को ताक में रखकर नहीं। आज अधिकांश लोग केवल किसी भी प्रकार से रातोंरात धनवान हो जाने की कार्ययोजना को क्रियान्वित करने में जुटे हैं। यहां पर जो चीज उन्हें प्रेरित कर रही है, वह है धन, लेकिन याद रखें धन से आप सुख-सुविधाएं और वस्तुएं खरीद सकते हैं, लेकिन शांति नहीं खरीद सकते।

संपादकीय

आतंकवाद के मुद्दे पर पूरा देश एकजुट

जब भी कोई संकट की घड़ी आती है, तो पूरा देश एकजुट हो जाता है। पहलगाम हमले के बाद एक ओर नागरिकों का आक्रोश सामने आया, तो दूसरी ओर वे पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई के मुद्दे पर सरकार और सेना के साथ खड़े दिखे। वहीं सभी राजनीतिक दल भी अपने मतभेद भुला कर आगे आए। भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव और सैन्य कार्रवाई के लिए बढ़ते दबाव के बीच सहमति की सकारात्मक तस्वीर दिखी।

इससे स्पष्ट है कि देश के सभी दल राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर एक हैं। 'आपरेशन सिंदूर' की सफलता के बाद बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में गुरुवार को सभी दलों ने न केवल सरकार का समर्थन किया, बल्कि सशस्त्र बलों के प्रति भी एकजुटता दिखाई। इससे पूरी दुनिया को संदेश गया है कि भारत आतंकवाद को बर्दाश्त नहीं करेगा और इस मसले पर अब सख्ती से पेश आएगा। इस लिहाज से देखें तो सर्वदलीय बैठक से एक व्यापक राष्ट्रीय सहमति भी बनी है। इसमें सभी दलों ने सुरक्षा संबंधी अपनी चिंता जरूर जताई, लेकिन किसी भी बहस से दूर रहे। यह भारतीय राजनीति की परिपक्वता का परिचायक है। सर्वदलीय बैठक इस मायने में भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें सरकार ने 'आपरेशन सिंदूर' से संबंधित कई जानकारियां साझा कीं। रक्षा मंत्री ने सुरक्षा चिंताओं को तरजीह देते हुए आश्वस्त किया कि पाकिस्तान के किसी भी

यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि भारत अब आर-पार के लिए तैयार है और आतंकवाद के खिलाफ उसकी शून्य सहिष्णुता की नीति है। वहीं दो कदम आगे बढ़ कर विपक्ष ने भी यह साफ कर दिया है कि राष्ट्र की सुरक्षा सर्वोपरि है और इस पर कोई राजनीति नहीं होगी।

सैन्य हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। सरकार बड़ा कदम उठाने से पहले जिस तरह पूरे देश को, खासकर विपक्ष को साथ लेकर चल रही है, उससे साबित होता है कि वह पड़ोसी देश द्वारा फैलाए गए आतंकवाद को समूल नष्ट करना चाहती है और कड़ी कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि भारत अब आर-पार के लिए तैयार है और आतंकवाद के खिलाफ उसकी शून्य सहिष्णुता की नीति है। वहीं दो कदम आगे बढ़ कर विपक्ष ने भी यह साफ कर दिया है कि राष्ट्र की सुरक्षा सर्वोपरि है और इस पर कोई राजनीति नहीं होगी। सर्वदलीय बैठक में सभी दलों की देश के लिए एकजुटता एक तरह से पाकिस्तान के लिए भी एक स्पष्ट संदेश है कि अगर वह किसी अन्य छिपी मंशा के मुताबिक लाभ उठाना चाहता है तो वहां भी उसे नाकामी हासिल होगी।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

मानव विकास सूचकांक रैंकिंग

मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) के नवीनतम संस्करण में भारत की तीन पायदानों की प्रगति मामूली संतोष की वजह ही हो सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि हम अभी भी 193 देशों वाले इस सूचकांक में निचले हिस्से में ही हैं और 2022 के 133वें स्थान की जगह 2023 में हम 130वां स्थान हासिल कर सके। जैसा कि रिपोर्ट बताती है, भारत मानव विकास के मामले में मध्यम श्रेणी में बना हुआ है। परंतु इस पूरी कहानी में कुछ सकारात्मक बातें भी हैं। एचडीआई मूल्य के 2022 के 0.676 से सुधर कर 2023 में 0.685 होने के साथ ही रिपोर्ट यह भी बताती है कि भारत उच्च मानव विकास के कगार पर है। उस दर्जे को हासिल करने के लिए 0.700 का एचडीआई मूल्य आवश्यक है। रिपोर्ट यह भी कहती है कि भारत का एचडीआई मूल्य सन 1990 से अब तक 53 फीसदी सुधार है। यह सुधार वैश्विक और दक्षिण एशियाई, दोनों से औसतन बेहतर है। यह पर्यवेक्षण बताता है कि कैसे भारत अधिकांश आबादी के लिए बेहतर सामाजिक-आर्थिक नतीजों के साथ अपने एचडीआई मूल्य में सुधार कर सकता है। भारत ने जिन क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की वे हैं, जीवन प्रत्याशा, जहां हम 1990 के 58.6 वर्ष से सुधरकर 2023 में 72 वर्ष पर आ गए। इसका श्रेय राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, आयुष्मान भारत और पोषण अभियान जैसे कई कार्यक्रमों को दिया जा सकता है। स्कूली शिक्षा के औसत वर्षों में भी सुधार हुआ है और 1990 में जहां 8.2 वर्ष तक बच्चों के स्कूल में रहने की संभावना होती थी वहीं अब यह सुधार 13 वर्ष हो चुका है। बहुआयामी गरीबी में कमी को सुधारों के वर्षों के बाद की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि माना जा सकता है। 2015-16 से 2019-21 के बीच करीब 13.5 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आ गए। इसके बावजूद भारत एचडीआई में पड़ोसी मुल्कों से पीछे है। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था यानी चीन इस सूचकांक में 75वें स्थान पर है। श्रीलंका और भूटान जैसे छोटे देश क्रमशः 78वें और 127वें स्थान के साथ हमसे बेहतर हैं। बांग्लादेश 130 वें स्थान के साथ भारत की बराबरी पर है। केवल नेपाल (145), म्यांमार (149) और पाकिस्तान (168) ही हमसे पीछे हैं। ये सभी देश गहरे राजनीतिक संकट के शिकार हैं। रिपोर्ट के अनुसार बढ़ती असमानता और लैंगिक असमानता भारत को एचडीआई में पीछे खींच रही हैं। वास्तव में असमानता ने भारत को एचडीआई में 30.7 फीसदी पीछे किया है। यह इस क्षेत्र के सबसे बड़े नुकसान में से एक है। एचडीआई रिपोर्ट से निकले संकेत स्पष्ट हैं। भारत को अपने सार्वजनिक अधोसंरचना क्षेत्र की आपूर्ति गुणवत्ता पर किए जाने वाले व्यय में तत्काल सुधार करने की आवश्यकता है ताकि अधिक से अधिक नागरिकों के पास गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य पाने का अवसर हो। राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना और बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रम, जो बालिकाओं की शिक्षा पर केंद्रित है, ने निःसंदेह मदद की है। परंतु भारत का शिक्षा और स्वास्थ्य व्यय अभी भी काफी कम है जिससे एचडीआई और आर्थिक वृद्धि के क्षेत्र में वह बदलाव नहीं आ पा रहा है जो आना चाहिए और जो दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों तथा हॉन्गकॉन्ग, ताइवान, सिंगापुर और दक्षिण कोरिया में आया है। हमारा स्वास्थ्य व्यय जीडीपी के 4 और 3.7 फीसदी के बीच रहा है जो दुनिया में सबसे कम है।

वर्द्धमान इंटरनेशनल स्कूल में मातृ दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन

मिसेज वर्द्धमान रूट्स विनर: श्रीमती मोना जेथलिया
प्रथम रनर-अप: श्रीमती निशा अग्रवाल
द्वितीय रनर-अप: श्रीमती श्वेता उपाध्याय
मिसेज ब्यूटीफुल स्माइल: श्रीमती श्रुति सोनी
आइकोनिक हेयर: श्रीमती प्रियंका सांखला
इम्पैक्टफुल पर्सनैलिटी: श्रीमती निशा अग्रवाल
मिसेज टैलेंटेड: श्रीमती श्वेता उपाध्याय
विवर्स चॉइस अवार्ड: श्रीमती रेखा सिंघारिया

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। वर्द्धमान ग्रुप के तत्वावधान में श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित वर्द्धमान इंटरनेशनल स्कूल में मातृ दिवस के अवसर पर एक भव्य और भावनात्मक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की विशेष अतिथि श्रीमान नरेंद्र पारख सर थे। साथ ही निर्णायक मंडल में श्रीमती वीना नाहर और श्रीमती गिरिजा शर्मा उपस्थित रहीं। यह आयोजन वर्द्धमान रूट्स विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती श्वेता नाहर की उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत नवकार मंत्र से की गई। कार्यक्रम में माताओं को समर्पित विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिनमें उन्होंने प्रेम, करुणा और त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में अपनी विशेष प्रस्तुतियाँ दीं। इस अवसर पर प्री-प्राइमरी बच्चों ने अपनी माताओं को स्वयं के बनाए सुंदर काड्र्स भेंट किए और मदर्स डे पर आधारित प्रतियोगिताओं में भाग लिया। माताओं द्वारा प्रस्तुत गीत, नृत्य, फैशन शो तथा अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों ने समारोह को अविस्मरणीय बना दिया। कार्यक्रम में तीन मुख्य राउंड आयोजित किए गए, जिनमें से विजेताओं की घोषणा की गई:

कार्यक्रम में प्राचार्या श्रीमती श्वेता नाहर ने माँ की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को उनके महत्व से अवगत कराया। इस आयोजन को सफल बनाने में वर्द्धमान रूट्स की संपूर्ण टीम का सराहनीय सहयोग रहा। यह आयोजन अत्यंत प्रेरणादायक और मनोरंजक रहा। कार्यक्रम के पश्चात सभी अतिथियों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई तथा वर्द्धमान शिक्षण समिति की फैशन अकादमी का भ्रमण भी कराया गया, जहाँ उन्हें मेकअप संबंधित कोर्स और उसकी विशेषताओं की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के समापन पर प्राचार्या श्रीमती श्वेता नाहर ने समस्त अतिथियों, अभिभावकों, बच्चों एवं वरिष्ठजनों का आभार व्यक्त किया। श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति के मंत्री डॉ. नरेंद्र पारख एवं अकादमिक निदेशक डॉ. आर. सी. लोढ़ा ने सभी को मातृ दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

जरूरतमंद माता की पुत्री के विवाह में सहयोग देकर सम्बल प्रदान किया

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

अजमेर। श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवम युवा महिला संभाग अजमेर की गोधा गवाड़ी इकाई द्वारा भोपो का बाड़ा निवासी जरूरतमंद विधवा महिला श्रीमती सविता देवी की पुत्री राखी जिसका विवाह आगामी दिनों में होने जा रहा है के विवाह में सहयोग प्रदान किया गया। गोधा गवाड़ी इकाई अध्यक्ष शशि जैन बज ने बताया कि इकाई सदस्य अनिता पाटनी, ज्योति वैद, रूपल पाटोदी, अनिता बडजात्या, सरिता पाटनी, संतोष बाकलीवाल, कविता पाटनी,अंजू गोधा,नीलम काला, आशा कासलीवाल, नीलु सोनी, सुनिता अजमेरा, मधु पाटनी, शशि जैन, निधि जैन, राकेश पालीवाल, पदम चंद जैन मधु अतुल पाटनी आदि के सहयोग से 2 बेस, 21 साड़ी, 6 सलवार सूट, ब्लैंकेट, बेड शीट,शाल, कार्डीगन, स्वेटर, परिवारजन के कपड़े, आर्टिफीशियल ज्वेलरी, सौंदर्य प्रसाधन की सामग्री, सजावट की सामग्री,रसोई के कार्य में आने वाले सभी प्रकार के स्टील के बर्तन,सभी प्रकार के सेलों के आइटम,मिक्सी, ओवन, कुकर, गैस चूल्हा, प्रेस,चौकी, बाथरूम सेट सहित अन्य सामग्री देकर सहयोग प्रदान किया गया। श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी ने इस अवसर पर बताया कि सामाजिक सरोकार के अंतर्गत जरूरतमंद महिला को सहयोग देकर सम्बल प्रदान किया गया इस सेवा से पूर्व भी समिति द्वारा 123 बालिकाओं के विवाह में पूर्ण सहयोग दिया गया है जिसे पूरे राष्ट्र के संभागों द्वारा सराहा गया है अंत में श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर संभाग के अध्यक्ष अतुल पाटनी ने सेवा सहयोगियों के प्रति विशेषकर समिति की गोधा गवाड़ी इकाई अध्यक्ष शशि जैन के संयोजन में दी गई सेवा की सराहना करते हुए बताया कि इस अवसर पर मधु पाटनी,शशि जैन बज,कविता पाटनी, अंकिता पाटनी, संतोष बाकलीवाल, रेणु पाटनी,ललिता अग्रवाल, सरोज अग्रवाल मनीष पाटनी, विनोद बाकलीवाल, राकेश पालीवाल अंतिमा पाटनी,हर्ष पाटनी आदि मौजूद रहे।

पोस्ट कार्ड

दिन, महीने, साल बीते
इंतजार में
जब
स्याही में भीगे भावों को
कागज पर
दिल की गहराई से
उकेरा जाता था
वो हर चिट्ठी
किसी धड़कते दिल की दस्तक होती थी,
लफ़्ज़ों में लिपटी महक
जैसे किसी की मौजूदगी से भी ज्यादा पास।
खोलते ही लिफाफा
एक चेहरा आंखों के सामने आ जाता था,
कभी कांपते हाथों से
खत का मजमून पढ़ा जाता था,
कभी बह जाती थी
आंसुओं की स्याही ।
वो इंतजार जो अधूरी शामों को
पुरी बना देता था
अब कहीं खो गया।
चिट्ठियां
अब अलमारी की तह में
मुरझाई सी
नींद ले रही हैं
उनके साथ
कुछ धड़कते हुए पल भी
सो गए हैं।
काश कोई फिर से
दिल की बात कागज पर लिखे,
और डाकिया
यादों की डोरी थामे
दरवाजा खटखटाए
लीजिए बाबूजी
चिट्ठी आई है.....

अमृतलाल मारू 'रवि' इंदौर मप्र

धर्म के प्रभाव से जहर भी अमृत बन जाता है : मुनिश्री विलोकसागर

श्री सिद्धचक्र विधान में 512 अर्घ समर्पित

मनोज जैन नायक. शाबाश इंडिया

मुरैना। सांसारिक प्राणी धर्म को यहां वहां ढूंढता फिरता है । वह धर्म को मंदिरों में, पहाड़ों में तलाशता है । लेकिन धर्म कहां है, धर्म तो प्राणी मात्र के अंदर है । प्रत्येक प्राणी के हृदय में धर्म विराजमान हैं। धर्म कोई बाजारू वस्तु नहीं हैं, जिसे बाजार से खरीदा जा सके । धर्म तो अनुभव करने की चीज है । धर्म के प्रभाव से जहर भी अमृत बन जाता है, तलवार की धार भी अपनी प्रकृति बदल लेती है, सर्प भी हार का रूप ले लेता है । धर्म की आराधना करने से सब कुछ शीतल हो जाता है। शास्त्रों में, पुराणों में अनेकों घटनाओं से साबित होता है कि धर्म हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। संसार में रहते हुए भी हम धर्म के बल पर सात्विक जीवन जी सकते हैं। धर्म हमें शक्ति देता है, प्रेरणा देता है, हमें दुखों से छुटकारा दिलाता है। उक्त उद्गार दिगम्बर जैन संत मुनिश्री विलोक सागर महाराज ने बड़े जैन मंदिर में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान के दौरान धर्म सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। जैन संत ने कहा कि धर्म प्राणी मात्र को जीवन जीने की कला सिखाता है। नफरत में वात्सल्य के बीज अंकुरित करता है, आने वाले संकटों से निपटने की शक्ति देता है। धर्म से इंद्रिय सुख भले ही न मिले, लेकिन अतेंद्रीय सुख की प्राप्ति होती है । धर्म सांसारिक प्राणी के दुखों का नाश करता है, धर्म प्राणी मात्र को दुखों से निकालकर सुख की अनुभूति कराता है। जब अपने अपनों से दूर हो जाएं, प्राणी संकटों ओर विषम परिस्थितियों में घिर जाए, आपका कोई सहारा न हो तब धर्म ही हमें सही रास्ता दिखाता है। पूज्य मुनिश्री ने बताया कि हमें धर्म की आराधना करते समय अपने इष्ट से यही प्रार्थना करना चाहिए कि हमारी आस्थाएं मजबूत हों। हम पर कैसा भी संकट आ जाए, कैसी भी विपत्ति आ जाए, हम अपने धर्म से दूर न हो जाएं, हे भगवन हमें ऐसी शक्ति देना । धर्म की आराधना करने से जीवन पावन व पवित्र हो जाता है। जब सभी रास्ते बंद हो जाते है तब केवल धर्म का सहारा ही रह जाता है। भगवान राम ने जब सीताजी का त्याग किया था तब सीताजी ने धर्म का ही सहारा लिया था। जीवन रूपी नैया को पार करने के लिए धर्म परम आवश्यक है । यदि हम 24 घंटों में से कुछ समय धर्म को देंगे तो धर्म भी हमारी रक्षा करेगा । जिस तरह हमें जीवन जीने की लिए वायु की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार संस्कारित जीवन जीने के लिए धर्म भी अतिआवश्यक होता है।

22 मई को होगी ज्ञान परीक्षा, सभी को मिलेंगे पुरस्कार

पूज्य युगल मुनिराजों के पावन सान्निध्य में 22 मई को आम लोगों के ज्ञान की परीक्षा ली जाएगी । पूज्य मुनिश्री ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी के व्यक्तित्व व कृतित्व से संबंधित 150 प्रश्नों का एक प्रश्न पत्र सभी को वितरित किया जायेगा । आप सभी उस प्रश्नपत्र को घर ले जाकर परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं। इस ज्ञान परीक्षा में किसी भी उम्र का, कोई भी जैन अथवा अजैन व्यक्ति सम्मिलित हो सकता है । आगामी 22 मई को बड़े जैन मंदिर के प्रांगण में उसी प्रश्नपत्र के माध्यम से आपकी एक घंटे की परीक्षा होगी । ज्ञान परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए जायेगें। इस ज्ञान परीक्षा को कराने का उद्देश्य आम लोगों को भगवान महावीर स्वामी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित कराना है ।

स्व त्रिलोकचंद प्रधान की पुण्यतिथि पर भक्तामर पाठ का आयोजन किया

दीपक प्रधान. शाबाश इंडिया

धामनोद। जैन मंदिर में श्री भक्तामर जी का पाठ का आयोजन स्व त्रिलोकचंद प्रधान की पुण्यतिथि पर किया गया। धामनोद के ख्याति प्राप्त आदर्श शिक्षक व जैन समाज के अध्यक्ष रहे स्व त्रिलोकचंद प्रधान की पुण्यतिथि पर भक्तामर पाठ आयोजित किया गया जिसमें भारी संख्या में समाज जन महिला पुरुष मुनिसेवा समिति के सदस्य उपस्थित होकर पाठ कर श्री जी की आरती की गई ।धर्म प्रभावना अशोक प्रभा दीपक मीना आदित्य नेहा प्रधान ने वितरित की।

''ओ मां मेरी मां'' गीत रिलीज

मातृभूमि एवं भारत मां को समर्पित प्रस्तुति

जयपुर. शाबाश इंडिया। ग्रेमी अवॉर्ड विनर एवं पद्म भूषण पंडित विश्व मोहन भट्ट ने युवा संगीतकार अंकित भट्ट द्वारा कंपोज गीत मां ओ मेरी मां को रिलीज किया। इस अवसर पर पंडित विश्व मोहन भट्ट ने कहा कि शिक्षा का पहला विद्यालय मां ही होती है, जो अपने बच्चों को ऐसे संस्कार देती है । वही संस्कार उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं । उन्होंने अंकित भट्ट के सृजन की सराहना करते हुए कहा कि आज के युवा संगीतकारों का भविष्य बहुत ही उज्जवल है। इस गीत को दुबई की गीति भट्ट ने लिखा। पद्म भूषण पंडित विश्व मोहन भट्ट, सुप्रसिद्ध गायिका दीपशिखा जैन, इस गीत के कंपोजर और संगीतकार अंकित भट्ट, कलाकार पंडित आलोक भट्ट मैं इस गीत को रिलीज किया। इस अवसर पर कला प्रेमी साहित्यकार और संगीत जगत की जानी-मानी हस्तियां उपस्थित थी। कल्पना संगीत विद्यालय द्वारा इस गीत को रिलीज किया गया इसकी रिकॉर्डिंग सतीश शर्मा द्वारा संस्था के राजन स्टूडियो में की गई।

भगत धन्ना जी के जीवन पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रीमियर शो 11 मई को

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान सिख समाज, जयपुर ने भगत धन्ना जी के जीवन पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म का निर्माण किया है। जिसका प्रीमियर शो सैंट सोल्जर स्कूल सी-स्कीम, जयपुर में रविवार, 11 मई को सायं 4 बजे होगा। भगत धन्ना जी का जन्म गांव धुआं कला, जिला टोंक राजस्थान में सन 1415 में एक जाट कृषक परिवार में हुआ। जिन्होंने अपनी भक्ति, प्रेम और हठ से पत्थर में से ठाकुर(प्रभु) उत्पन्न करवा दिए। प्रभु प्रति निष्ठा को इंगित करते उनके तीन श्लोक गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है। उनके रचित एक शब्द गोपाल तेरा आरता, जो जन तुमरी भगत करंते तिन के काज संवारता का नित्य गायन आरती के रूप में हर गुरुद्वारे में होता है। उन्होंने अपने जीवन यापन के लिए प्रभु से सांसारिक वस्तुओं की मांग निधड़क होकर कर डाली। जिसमें घर चलाने के लिए स्त्री की मांग भी शामिल है। राजस्थान में जहां जहां गुरु साहिबानों के चरण पड़े या उन स्थानों का जिनका संबंध सिख धर्म से है, की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए राजस्थान सिख समाज डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाता है। इसी श्रृंखला में गुरु गोबिंद सिंह जी के राजस्थान आगमन पर भी फिल्म बना चुका है। भगत धन्ना जी पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म का लेखन और डायरेक्शन सिख जागृति के संपादक ओंकार सिंह ने किया है। इस फिल्म में परमजीत कौर, मुस्कान परवानी, कमलदीप कौर, जसलीन कौर ने भाग लिया। फिल्म में कमेंट्री डॉ तरनजीत कौर और मनमीत कौर ने दी है। इसकी शूटिंग भगत धन्ना जी की जन्मस्थली धुआं कला, टोंक में हुई जहां भगत धन्ना जी के नाम से ऐतिहासिक गुरुद्वारा बना हुआ है।

ओंकार सिंह: संपादक,
सिख जाग्रति जयपुर, 9982222606

राजकीय सम्मान से सम्मानित,
ईमानदार व्यक्तित्व के धनी,
सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता,
विशद छाया मंच के राष्ट्रीय महामंत्री,
वीर सेवक मंडल के कर्मठ कार्यकर्ता,
राजस्थान जैन युवा महासभा राजस्थान के सहमंत्री,
दिगंबर जैन महा समिति जयपुर के प्रचार प्रसार मंत्री,
चेस पेरेंट्स एसोशिएशन राजस्थान के मीडिया प्रभारी,
लघु उद्योग भारती राजस्थान अंचल के वरिष्ठ सदस्य,
वरुण पथ दिगंबर जैन मंदिर के आजीवन सदस्य,
प्रबुद्ध चाय पत्ती के व्यवसायी

जिनेश कुमार जैन
(राजकीय सम्मानित)

को 16 विवाह वर्षगांठ की
बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं

समत्व से संबोधि की यात्रा ही बुद्ध पूर्णिमा

पदमचंद गांधी

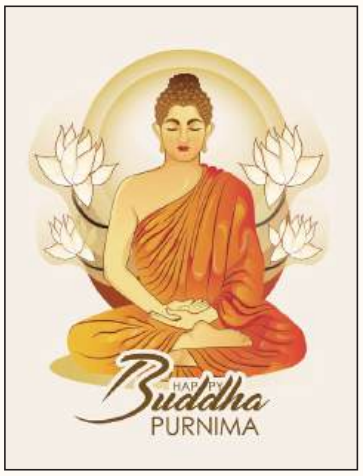

राजकुमार सिद्धार्थ ने किशोर अवस्था में कृष, रुग्ण एवं विकृत व्यक्ति को, बूढ़े लाचार, जर्जर भिखारी को, एवं एक शव यात्रा को देखकर हृदय में जीवन मृत्यु के मूल प्रश्नों पर चिंतन मनन करने पर मजबूर कर दिया। तब उन्होंने जीवन की अनिश्चितता को, संसार की असारता को, शरीर की नश्वरता को, मिटने मिटाने योग्य समझा। तब उन्होंने महसूस किया जब सब नश्वर है तो इतने उपद्रव ,भाग दौड, आरंभ सारम किसके लिए? इस भावना ने उनको झकझोर दिया और वह संसार से विरक्त हो गए। उनके भीतर करुणा, मैत्री और प्रेम के बीज अंकुरित होने लगे। यशोधरा से विवाह कर राहुल नाम के पुत्र की प्राप्ति करने पर भी संसार की नश्वरता उनके मन में वैराग्य का दीप प्रज्वलित कर रही थी। राजा सिद्धार्थ द्वारा रचित वैराग्य को उतारने एवम नष्ट करने के सारे प्रयास धूमिल करते हुए राजकुमार सिद्धार्थ सत्य की खोज में निकल पड़े। छः वर्ष तक उन्होंने बड़ी तपस्या की । बड़ी योग साधना की और उस साधना में अपने शरीर को सुखा दिया। चमडी-हड्डियों से चिपकने लगी। हड्डियां कड़कड़ बोलने लगी। शरीर को पूरा गला दिया। तब उनके मन में विचार आया मैंने अपने शरीर को सुखा दिया है , गला दिया है , जर्जर कर कर लिया है और मैं आज छोटी सी नदी निरंजन को पर भी नहीं कर सकता तो भवसागर कैसे पर होगा? इससे उन्हें बड़ा बौध हुआ। उन्होंने सोचा यह मैंने क्या कर लिया? यह तो आत्मघाती की प्रक्रिया हो गई? मैं निरंजना नदी पार करने में असमर्थ हो गया तो भवसागर मैं कैसे पर करूंगा ? उस सांझ उन्होंने ऐसे विचार छोड़ दिये। घर, राजपाट सब पहले ही छोड़ चुके थे। उस संध्या उन्होंने मोह, योग, आसक्ति सब छोड़ दिया। भोग पहले छूट गया था। इस भावना से वे निश्चिंत हो गए और उन्हें उस रात्रि में अच्छी नींद भी आई । बुद्ध पहली बार निश्चिंत सोए। न संसार बचा न मोक्ष बचा। कुछ पाना ही नहीं था तो अब चिंता कैसी थी। चिंता तो पाने से पैदा होती है जब पाना हो तो चिंता पैदा होती है। उस रात कोई चिंता नहीं रही। मोक्ष की भी चिंता नहीं रही। वह बात ही उन्होंने छोड़ दी। बुद्ध ने कहा यह सब व्यर्थ है। न यहां कुछ पाने को है। न वहां कुछ पाने को है। पाने को कुछ है ही नहीं तो मैं दौड़ में परेशान यूं ही हो रहा हूं। अब मैं चुपचाप सारी यात्राएं छोड़ देता हूं। इस प्रकार उस रात उन्होंने अपने जीवन को जीवन की धारा के साथ समर्पित कर दिया। सुबह आंख खुली तो उन्हें पाया कि समाधिस्थ हो गए। उन्होंने कहा मुझे लगता है की समाधि फलित हो गई है । पहली बार मुझे ज्ञान हुआ है। मैं अपूर्व ज्योति से भरा हूं। मेरे सब दुःख मिट गए हैं। मुझे कोई चिंता नहीं रही। मुझे कोई तनाव नहीं रहा। मैं ही नहीं रहा। मैं समाप्त हो गया हूं। मुझे तो पक्का अनुभव हो रहा है कि मैंने पा लिया है जो पाने योग्य है मुझे मिल गया है। उन्हें समझ में आया कि जो छोड़ता है वही प्राप्त करता है। मैंने अहम को छोड़ा आसक्ति को छोड़ा, मोह को छोड़ा तो मुझे बौध प्राप्ति हुई लेकिन इसको प्रमाणित करने के लिए जो खीर युक्त पात्र सुजाता ने दिया था उस पात्र को नदी में छोड़ते हुए कहा अगर यह पात्र नीचे की तरफ न जाकर नदी के ऊपर की तरफ बहने लगे तो मैं मान लूंगा कि मुझे संबोधि हो प्राप्त गई है। थोड़ी देर बाद में वह पात्र नदी के ऊपर की तरफ बहने लगा। तेजी से बहने लगा और जल्दी ही आंखों से ओझल हो गया। यह सिद्ध करता है कि उसे रात बुद्ध ने अपने को छोड़ दिया। नदी की धारा में बहने के लिए अर्थात निश्चिंत हो गए, हल्के हो गए, अनासक्ति बन गए। इस प्रकार नदी ने भी प्रमाण दिया कि अब तुम ऊपर की धारा में भी जा सकते हो। तुम्हारे द्वारा छोड़ा हुआ पात्र भी उरध्वगामी हो जाएगा। यही अध्यात्म है। अध्यात्म का मूल आधार है। यदि हम उतर जाएं संसार में, पूरे भाव से, समग्र भाव से, सब छोड़कर, झगड़ा नहीं, झंझट नहीं, कलह नहीं सिर्फ होश रखते हुए जीवन में उतर जाए तो अचानक हम एक दिन पाएंगे कि हमने जो नीचे जाने के लिए समर्पण किया था, परंतु हम ऊपर जाने लगे। तब हमारे हाथ के छोड़े हुए पात्र भी जीवन की धारा में ऊपर की तरफ यात्रा करने लगेंगे। बुद्ध की यही कथा अत्यंत प्रेरणास्पद है। जीवन की धारा प्रकृतिगत है और प्रकृतिगत ढंग से ही हमें इसमें बहते चले जाना है। जीवन की यह धारा कर्म की धारा है । कर्म हमें बहाता है। सत्कर्म जीवन की दशा एवं दिशा को अपने लक्ष्य तक ले जाता है। बुद्ध का यह संदेश है कि हमें सत्कर्म करते हुए आगे बढ़ाना है, अनासक्त बनना है।

समवशरण मंदिर इंदौर में हुआ गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ का मंगल प्रवेश

इंदौर.शाबाश इंडिया

प. पू. भारत गौरव श्रमणी गणिनी आर्यिका गुरु मां विज्ञाश्री माताजी ससंघ का बीस पंथी मंदिर से समवशरण मंदिर इंदौर के लिए मंगल विहार हुआ। इसी मध्य माताजी ससंघ ने लश्कर मंदिर , कल्याण भवन व इन्द्र भवन मंदिरों के भी दर्शन किये। समवशरण मंदिर में उपाध्याय विश्रुत सागर जी एवं विभंजन सागर जी महाराज से वात्सल्य मिलन हुआ। माताजी की निर्विघ्न आहारचर्या संपन्न करवाने का सौभाग्य ब्र. अनिता दीदी जी को प्राप्त हुआ। माताजी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि धन्य है वह धरती जहां गुरुओं और संतों के चरण पड़ते हैं। यह अपने सातिशय पुण्य का ही प्रभाव है जिसके कारण हम संतों की सेवा कर पाते हैं। सच्चे देव - शास्त्र - गुरू की सेवा, वैयावृत्ति, दान आदि देने का असीम फल स्वर्ग आदि में अपना स्थान सुनिश्चित करना है। माताजी ने उदाहरण देते हुए कहा कि एक कुत्ता जिसके गले में पट्टा है वो पालतू है और जिसके गले में पट्टा आदि नहीं है वह फालतू है। एक कुत्ता अउ की गाड़ी में घूमता है अच्छा खाता है। यहां तक की अच्छे कपड़ें भी पहनता है और एक कुत्ता गलियों में घूमता, खाने के लिए तड़पता है तो ये सब पूर्व कर्म का ही फल है। जो कुत्ता पालतू है उसने पूर्व में दान किया होगा, देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति की होगी पर अंतिम समय उसके भाव विपरीत हो गये जिसका फल तिर्यंच पर्याय में जन्म मिला लेकिन दान का फल भी उसे मिला इसलिए पालतू बना। हम सब भी यदि मन से दान पूजा सेवा करेंगे तो फालतू नहीं बनेंगे। लेकिन हमें न फालतू बनना है न पालतू तो अपने भावों को संभालकर धर्म में लगाये रहे जिससे हमारा इस मनुष्य भव में जैन धर्म पाना सार्थक हो जाए।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

ऑपरेशन सिंदूर

पहलगांव में जब उजाड़ा अनेकों मासूमो का सिंदूर।
पाकिस्तान खुशी में झूम रहा था होके मगरूर।
बोले थे मोदी को बता देना बैठे नहीं हम दूर।
पाक ने उकसाया शांतिप्रिय भारत को, किया आक्रमण के लिए मजबूर।
सभी पार्टी पॉलिटिक्स भूल एकजुट हुए और ऐलान हुआ ऑपरेशन सिंदूर।
आतंकवादियों के रातोरात छक्के छुड़ा दिए ,टूट गया सारा गुरूर।
अनेकों कुकर्म के ठिकाने कर दिए भारतीय सेना ने चकनाचूर।
पर हमे और चौकन्ना रहना है छुपा कर जीत का सरूर।
दुश्मन देश कुछ तो और घटिया हरकत करेगा जरूर।
सभी देशवासियों को एकजुट रह कर,
और करना विश्वास अपनी सरकार व फौज पर भरपूर।
तभी पूर्ण रूप से कामयाब होगा ऑपरेशन सिंदूर।

जय भारत

डा समीर मेहता

श्री प्रदीप-श्रीमती उर्मिला बाकलीवाल
सदस्य दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति

10 मई' 25

9314968650

की वैवाहिक वर्षगांठ पर
हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

शुभेच्छु

अध्यक्ष: मनीष - शोभना लोंग्या
संस्थापक अध्यक्ष: राकेश - समता गोदिका
सचिव: राजेश - रानी पाटनी
कोषाध्यक्ष: दिलीप - प्रमिला जैन
सांस्कृतिक सचिव: कमल-मंजू ठोलिया

एवं समस्त सदस्य दिग. जैन सोशल ग्रुप सन्मति, जयपुर